Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part - 1 (Hons)
Paper - I
Indian Philosophy

1. "Conception of God (Nyaya)"

ईश्वरवाद आस्तिक दर्शनों की आधार शिला है। सभी आस्तिक दर्शनों में न्याय का विशेष महत्व है, क्योंकि यह दर्शन आदि से अन्त तक ईश्वरवादी है। न्याय दर्शन में ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए अत्यन्त ही गम्भीरता एवं बारीकी से विचार किया गया है। नैयायिकों के अनुसार ईश्वर प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द तीनों प्रमाण से सिद्ध है।

न्याय दर्शन के प्रवर्तक महर्षि गौतम ने यह प्रतिपादन किया है कि जीवों के कर्मानुसार ईश्वर जगत की सृष्टि और जीवों के सुख-दुःख का विचरण करते हैं। नव्य-नैयायिक भी ईश्वर का पूर्ण विचार करते हैं और उसे मोक्ष के लिए आवश्यक मानते हैं। वे कहते हैं कि ईश्वर की दया से ही जीवात्मा वस्तुओं का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर सकता है और तब मोक्ष प्राप्त कर सकता है। कोई भी व्यक्ति ईश्वर की अनुकंपा के बिना न तो पदार्थों का ज्ञान प्राप्त कर सकता है और न अपवर्ग की ही प्राप्ति कर सकता है।

न्याय-दर्शन में ईश्वर को आत्मा कहा गया है जो कि चैतन्ययुक्त है। न्याय के अनुसार आत्मा दो प्रकार की होती है। (1) जीव आत्मा (2) परमात्मा।

न्याय दर्शन में परमात्मा को ही ईश्वर कहा गया है और ईश्वर को जीवात्मा से पूर्णतः भिन्न माना गया है। ईश्वर का ज्ञान नित्य है परन्तु जीवात्मा का ज्ञान अनित्य, आंशिक और सीमित है। ईश्वर सभी प्रकार की पूर्णता से युक्त है जबकि जीवात्मा अपूर्ण है। ईश्वर न बद्ध है और न मुक्त। इसके विपरीत जीवात्मा

पहले कल्पान में रहता है और बाद में मुक्त होता है।

न्याय - दर्शन के अनुसार ईश्वर विश्व का आदि स्रष्टा - पालनकर्ता, तथा संहार कर्ता है। वह विश्व की सृष्टि शून्य से नहीं करता है, वह विश्व की सृष्टि पृथ्वी जल वायु, अग्नि के परमाणुओं तथा आकाश दिक्काल, मन तथा आत्माओं के द्वारा करता है। ईश्वर के साथ रहने वाली नित्य सत्ताओं का विश्व में रूपान्तर होना ही सृष्टि है। यद्यपि ईश्वर विश्व की सृष्टि अनेक द्रव्यों के माध्यम से करता है फिर भी ईश्वर और इन द्रव्यों के बीच 'आत्मा और शरीर का सम्बन्ध है। सृष्टि का उपादान कारण चार प्रकार के परमाणु हैं जिनके संयोजन से सृष्टि होती है। परन्तु ये आत्मा गतिहीन होते हैं। इसमें गति संचालन ईश्वर के द्वारा होता है। अतः ईश्वर के अभाव में सृष्टि की कल्पना नहीं की जा सकती है। जगत की व्यवस्था और एकता का कारण परमाणुओं का संयोजन नहीं वरन कोई सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ 'व्यक्ति' ही हो सकता है और वह सर्वज्ञ व्यक्ति ईश्वर है।

ईश्वर विश्व का पालन-कर्ता भी है वह विश्व की विभिन्न वस्तुओं को स्थिर रखने में सहायक होता है। यदि ईश्वर विश्व को धारण नहीं करता समस्त विश्व का अन्त हो जायगा। विश्व को धारण करने की शक्ति सिर्फ ईश्वर में है। क्योंकि परमाणु अचेतन होने के कारण विश्व को धारण करने में असमर्थ हैं। ईश्वर को सम्पूर्ण विश्व का ज्ञान रहता है।

ईश्वर विश्व का संहारक भी है। जिसप्रकार मिट्टी के घड़े का नाश होता है उसीप्रकार विश्व का भी नाश होता है

जब-जब विश्व में धार्मिक और नैतिक पतन होता है, तब-तब ईश्वर अपने विध्वंसक शक्ति-तत्वों के द्वारा विश्व का विनाश करता है। अतः नैतिक और धार्मिक अनुशासन के लिए ईश्वर विश्व का संहार करता है।

ईश्वर मानव का कर्म फलदाता है। हमारे सभी कर्मों का नियामक ईश्वर है। शुभ कर्मों का फल सुख तथा अशुभ कर्मों का फल दुःख होता है। जीवात्मा को शुभ अथवा अशुभ कर्मों के द्वारा ही ईश्वर सुख तथा दुःख प्रदान करता है।

ईश्वर संसार का धर्म व्यवस्थापक भी है। ईश्वर संसार का निमित्तकारण है किन्तु जीवात्माओं के कर्मों का वह प्रयोजक कारण है। कोई भी जीव यहाँ तक कि कोई भी मनुष्य अपने कार्यों को करने में पूर्णरूप से स्वतंत्र नहीं है। वह केवल अपेक्षाकृत स्वतंत्र है। अर्थात वह परमात्मा की प्रेरणा के अनुसार ही कार्य करता है। जिसपर कोई बुद्धिमान और एक दयालु पिता अपने पुत्र को उसकी मेधा, योग्यता एवं उपार्जित गुण के अनुसार कार्य करने को प्रेरित करता है, उसी प्रकार ईश्वर भी सभी जीवों को अपने-अपने अदृष्ट (अतीत संस्कार) के अनुसार कर्म करने को तथा उनके अनुसार फल पाने को प्रेरित करता है। मनुष्य अपने कर्मों का कर्ता तो है लेकिन वह ईश्वर के द्वारा अपने अदृष्ट (या अतीत कर्म) के अनुसार प्रेरित या प्रयोजित होकर कर्म करता है। अतः ईश्वर को जीव के कर्मों का प्रयोजक कर्ता कहते हैं। इसप्रकार ईश्वर संसार के मनुष्यों एवं मनुष्येतर जीवों का धर्म-व्यवस्थापक है, उनका

कर्मफल - दाता और उनके सुख - दुःखों का निर्णायक है।

न्याय - दर्शन ईश्वर को व्यक्तित्वपूर्ण मानता है, जिसमें ज्ञान सत् और आनन्द निहित है। ईश्वर की कृपा से ही मानव मोक्ष को अपनाने में सफल होता है। न्याय के अनुसार ईश्वर अनन्त गुणों से युक्त है जिनमें छः गुण प्रमुख है — आधिपत्य (Majestic) वीर्य (Almighty) यश (All glorious) श्री (Infinitely beautiful) ज्ञान (knowledge) एवं वैराग्य (Detachment) ये गुण ईश्वर में पूर्णरूप से व्याप्त है।

ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए न्याय - दर्शन में अनेक तर्कों का प्रयोग हुआ है। जिनमें मुख्य इस प्रकार है :→

1. कार्य - कारण नियम पर आधृत तर्क
2. अदृष्ट नियम पर आधृत तर्क
3. वेदों की प्रामाणिकता पर आधृत तर्क।
4. श्रुतियों की आप्तता पर आधृत तर्क।
5. उदयनाचार्य द्वारा दिये गये नौ प्रमाण।

1. कार्य - कारण नियम पर आधृत तर्क :— कार्य - कारण नियम के अनुसार हर वस्तु का कुछ कारण होता है। न्याय की दृष्टि से संसार के समस्त पदार्थों की दो श्रेणियाँ है: नित्य और अनित्य। नित्य वस्तुएँ कारण रूप और अनित्य वस्तुएँ कार्यरूप है। ये कार्यरूप वस्तुएँ कारणरूप उपादान वस्तुओं से बनी है। इन कारणरूप उपादान वस्तुओं के संयोग से कार्यरूप वस्तुओं का निर्माण करनेवाला उनका प्रयोजक और

JUNE 2013 WK	M	T	W	T	F	S	S
22						1	2
23	3	4	5	6	7	8	9
24	10	11	12	13	14	15	16
25	17	18	19	20	21	22	23
26	24	25	26	27	28	29	30

JULY 2013 WK	M	T	W	T	F	S	S
27	1	2	3	4	5	6	7
28	8	9	10	11	12	13	14
29	15	16	17	18	19	20	21
30	22	23	24	25	26	27	28
31	29	30	31				

निमित्त कारण कोई तीसरा ही है। वह तीसरी सत्ता सर्वज्ञ है और उसी को न्याय में ईश्वर कहा गया है।

२. अदृष्ट - नियम पर आधारित तर्क :— यह तर्क एक दृष्टि कोण से नैतिक प्रमाण कहा जा सकता है। ऐसा विश्वास है कि मनुष्य को हर कर्म का फल भुगतना पड़ता है। हमारा वर्तमान जीवन एक अर्थ में, हमारे भूत - जीवन के कर्मों का परिणाम है। तो अदृष्ट - नियम जिसे कर्म - नियम भी कहा जा सकता है, हमारे जन्म पुनर्जन्म और जीवन को संचालित करता है।

जीव को अपने कर्मों के अनुसार शरीर प्रारब्ध, योनि आदि मिलते हैं। अदृष्ट नियम तो एक अचेतन नियम है चूंकि अच्छे और बुरे कर्मों और कर्मफलों का हिसाब - किताब एक अचेतन नियम से नहीं चल सकता। अतः इस नियम को अमल में लानेवाले का अस्तित्व स्वीकार करना पड़ता है एक चेतन सर्वज्ञ और शक्तिमान ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करना पड़ता है। वही इस अचेतन नियम का निर्णायक और चालक हो सकता है।

३. वेदों की प्रामाणिकता पर आधारित तर्क :— न्याय वेद की प्रामाणिकता को स्वीकार करता है और मानता है कि वेद सत्य और ज्ञान का भण्डार है। यदि वेद का रचयिता कोई मनुष्य होता तो वेदों को यह प्रामाणिकता प्राप्त न होती और वेदों में जो आध्यात्मिक और असाधारण सत्य और सत्य - दर्शन

की बात की गयी है वह भी असम्भव न होती। तो, मानना पड़ता है कि वेद किसी ऐसे आप्त आत्मा की वाणी है जो स्वयं सिद्ध है, जिसे सत्यज्ञान स्वतः प्राप्त है और जो सर्वज्ञानी है। तो, इस प्रकार वेदों की प्रामाणिकता के आधार पर ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करना पड़ता है।

(४.) श्रुतियों की आप्तता पर आधृत तर्क — कहा गया है कि श्रुतियाँ सुनी गयी हैं। इनमें बहुत से ऐसे उदाहरण दिये जा सकते हैं जो कहते हैं कि ईश्वर है। वेद देववाणी है। वह कहता है कि ईश्वर है। इस कारण ईश्वर है। यह तर्क कोई तर्क नहीं, शब्द ज्ञान है। इसके अनुसार ईश्वर है, क्योंकि वेदों में ऐसा कहा गया है।

(5.) उदयनाचार्य द्वारा दिये गये नौ तर्क — उदयनाचार्य ने ईश्वर की सत्ता को प्रमाणित करने के लिए नौ तर्कों को दिया है, जो इस प्रकार है—

कार्यायोजनधृत्यादेः पदात् प्रत्ययतः श्रुतेः।
वाक्यात् संख्याविशेषाच्च साध्यो विश्व विद्व्ययः॥

1. कार्यात् (सृष्टि विज्ञान का तर्क) यह जगत् एक कार्य है तो अवश्य ही कोई-न-कोई इसका efficient cause होगा और वह efficient cause ईश्वर है, विश्व में व्यवस्था है, संगठन है जिसका कारण ईश्वर है।

घड़े की उत्पत्ति होती है, अतः वह कार्य है और उसको उत्पन्न करनेवाला एक कर्त्ता होता है। उसी प्रकार जगत् भी एक कार्य है जिसका कोई कर्ता अवश्य है। इतने बड़े जगत् का कर्त्ता तो कोई साधारण पुरुष हो ही नहीं सकता। इसको उत्पन्न करनेवाले को सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ होना चाहिए। न्याय के अनुसार यह सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान कर्त्ता ईश्वर है। यह विश्व अनेक परमाणुओं से बना है जो कि इस विश्व का उपादान कारण है और ईश्वर इस विश्व का निमित्त कारण है। जो इस

अचेतन परमाणुओं में गति प्रदान करता है। इसे कार्यात् कहा जाता है।

(2) आयोजनात् (आयोजन मूलक तर्क):— गतिहीन परमाणु विश्व के विभिन्न पदार्थों का निर्माण द्वयणुक तक नहीं कर सकता जबतक कि ईश्वर उनमें गति प्रदान नहीं करता है। न्याय के अनुसार विश्व के पदार्थों का निर्माण परमाणुओं के संयोजन से ही हुआ है और इन अचेतन परमाणु को ईश्वर की आवश्यकता होती है। क्योंकि इन Atoms में Action या Motion आना आवश्यक है जो बिना ईश्वर की शक्ति के संभव नहीं। इसे आयोजन कहा गया है।

प्रलयकाल में समस्त कार्य जगत परमाणुरूप में आकाश में रहता है। ये परमाणु जड़ है। सृष्टि के अवसर पर इन्हीं परमाणुओं के आरम्भिक संयोग से सृष्टि होती है। परमाणुओं में संयोग उत्पन्न करने के लिए चेतन की आवश्यकता होती है और वह चेतन पदार्थ ईश्वर है।

3. धृत्यादेः (आधार मूलक):— यह संसार ईश्वर की इच्छा पर ही आधारित है। सृष्टि किस आधार पर टिकी है एवं इसका विनाश कैसे होता है — इसके लिए ईश्वरीय इच्छा को मानना आवश्यक है। इसे 'धृत्यादेः' कहा जाता है, अन्यथा इसका पतन हो जायेगा और वह आधार ईश्वर है।

4. पदात् (पद मूलक):— शब्द का अर्थ होता है किसी वस्तु को signify करना, परन्तु इस शब्द को शक्ति कहाँ से मिलती है, इसे 'पदात्' कहा जाता है।

5. प्रत्ययतः (प्रत्यय मूलक तर्क) न्याय दर्शन orthodox होने के कारण वेदों में विश्वास करता है और वेदों को अपौरुषेय कहा गया है क्योंकि इसकी रचना किसी पुरुष विशेष द्वारा नहीं हुई है। ईश्वर की

वेद की रचयिता है। इसे प्रत्ययात कहा जाता है। वेद को प्रमाणिक तभी मान सकते हैं, जब इसका रचयिता प्रमाणिक हो। यही वेद का रचयिता ईश्वर है क्योंकि ईश्वर प्रमाणिक है।

(6) श्रुते: (श्रुति - प्रमाण) - वेद को श्रुति भी कहा गया है। यह ईश्वरीय सत्य है जिसे मुनियों के द्वारा सुना गया है। वेदों में ईश्वर का प्रमाण है। वेदों की प्रमाणिकता के आधार पर ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। श्रुति में कहा गया है कि ईश्वर है। इसे श्रुते: कहा गया है।

(7) वाक्यात (वाक्यमूलक):— नैतिक वाक्यों का सम्बन्ध Moral intuction और Prohibitions से है। Vedic Commands ही Divine Commands है नैतिक नियमों का नियमों का निर्माता, संचालन और निर्णायक भी ईश्वर ही है। इसे 'वाक्यात' कहा गया है।

(8) संख्या विशेषात्च (द्वित्व मूलक तर्क):— संख्यात्मक ज्ञान के लिए चैतन्य की आवश्यकता होती है। सृष्टि के समग्र Souls Atoms, space and time, minds सभी Unconscious होते हैं। इसीलिए यह सभी एक चेतन सत्ता पर निर्भर करता है और वह चेतन सत्ता ईश्वर ही है। इसे 'संख्या - विशेषात्च' कहा जाता है।

(9) अदृष्टात (अदृष्ट मूलक तर्क) हम जिस तरह का कार्य करते हैं वैसा ही फल पाते हैं। यह सभी अदृष्ट नियम से संचालित होता है। परन्तु यह अदृष्ट नियम चेतन या Intelligent नहीं होता। इसे किसी चेतन तथा सर्वज्ञ संचालक की आवश्यकता होती है जो कि ईश्वर ही है। इसे 'अदृष्टात' कहा जाता है।

लेकिन न्याय - दर्शन के ईश्वर सम्बन्धी विचारों के विरुद्ध अनेक आपत्तियाँ हैं-

1. ईश्वर की पूर्णता को

स्वीकार करने के बाद creation की व्याख्या असम्भव हो जाती है। न्याय के अनुसार ईश्वर विश्व की सृष्टि किसी प्रयोजन से करता है। मगर जब ईश्वर पूर्ण है तो वह इस विश्व की सृष्टि किसी प्रयोजन से करता है। ईश्वर का अपना प्रयोजन सृष्टि में नहीं है, क्योंकि वह पूर्ण है। यह भी नहीं कहा जा सकता है कि करुणावश ईश्वर ने इस विश्व की सृष्टि की है। करुणावश यदि इस विश्व की सृष्टि होती तो विश्व में दुःख नहीं रहता, बल्कि यह विश्व सुखात्मक बन जाता।

(ii) ईश्वर को कर्त्ता मानने से फिर उसे शरीरयुक्त भी मानना पड़ेगा क्योंकि शरीर के अभाव में कोई भी कर्म नहीं हो सकता है। परन्तु न्याय दर्शन ने इस आक्षेप का समाधान करते हुए कहा है कि ईश्वर का अस्तित्व श्रुति से प्रमाणित हो चुका है। अतः ईश्वर के सम्बन्ध में इस तरह का प्रश्न उठना युक्तसंगत नहीं जान पड़ता है।

(iii) वेद के प्रामाण्य का आधार ईश्वर को माना गया है। और पुनः ईश्वर के अस्तित्व का आधार वेदों को माना गया है जो contradictory है या अन्योन्याश्रय दोष है। परन्तु यह दोष निराधार है क्योंकि, अस्तित्व की दृष्टि से वेद ईश्वर पर निर्भर है चूंकि ईश्वर वेद के रचयिता है। और ज्ञान की दृष्टि से ईश्वर वेद पर निर्भर है क्योंकि वेदों के द्वारा हमें ईश्वर का ज्ञान होता है। अन्योन्याश्रय दोष तब होता है जब दो विषय समान दृष्टि से परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर हो परन्तु ईश्वर और वेद विभिन्न दृष्टियों से एक-दूसरे पर निर्भर है।

(iv) न्याय का ईश्वर का

अस्तित्व प्रमाणित करने का सभी तर्क असफल है क्योंकि ईश्वर का ज्ञान साक्षात् अनुभव से होता है तार्किक युक्तियों द्वारा नहीं। यह युक्ति विचारधारा प्रमाणित करती है जो ईश्वर को जानने के लिए प्रयत्नशील है। अत: सभी युक्तियाँ ईश्वर के अस्तित्व की संभावना को सिद्ध करती है, ईश्वर के Real existence को नहीं।

(V) न्याय-दर्शन में ईश्वर को इस विश्व का निमित्तकारण कहा गया है। परमाणु तथा आत्मा इसके उपादान कारण है। इसका अर्थ यह है कि इस विश्व की रचना के लिए ईश्वर को उपादान कारण पर निर्भर करना पड़ता है और कर्म सिद्धान्त के द्वारा ईश्वर निर्देशित होता है। इसी ध्यान में रखते हुए Prof. C.D. Sharma ने कहा है, God is an eternal reality is always limited by the co-eternal atoms and souls and has to be guided by the law of Karm.

(Vi) न्याय-दर्शन ईश्वर को इस विश्व का निमित्तकारण मानकर परमाणु तथा ईश्वर के बीच एक प्रकार की खाई की स्थापना की है जिसमें इन दोनों के बीच हमेशा ईश्वर वर्तमान रहता है और इन द्वैत का चारितार्थ संभव नहीं है- Dr. C.D. Sharma के शब्दों में — "An atomistic and spiritualistic pluralistic of matter and spirit can never over come."

(Vii) मोक्ष का अर्थ है सभी प्रकार के गुणों से युक्त होना, लेकिन न्याय दर्शन में ईश्वर में छः प्रकार के गुणों को स्वीकार किया है। अत: ईश्वर को शाश्वत रूप से न्याय-दर्शन बंधन ग्रस्त माना गया है।

इस प्रकार न्याय-दर्शन में ईश्वर को प्रमाणित करने के लिए अनेक तर्कों का प्रयोग किया गया है। मगर वस्तुत: ईश्वर आस्था और विश्वास का विषय है। तर्कों के आधार पर ईश्वर को न तो सिद्ध किया जा सकता है और न असिद्ध। तर्कातीत ईश्वर को तर्क की परिधि में नहीं लाया जा सकता।